अभिनव मीमांसा

जुलाई-सितम्बर, 2023

संपादक-डॉ. विवेक पाण्डेय

प्रथम भागीदारी साहित्य महोत्सव

श्री असीम अरुण
मा. मंत्री समाज कल्याण

मा. मंत्री समाज कल्याण, उत्तर प्रदेश सरकार श्री असीम अरुण की अभिप्रेरणा से समाज कल्याण विभाग, उ.प्र. एवं मेटाफर, लखनऊ लिटरेचर फेस्टिवल द्वारा संयुक्त रूप से भागीदारी साहित्य उत्सव का आयोजन दिनांक 30 जुलाई, 2023 को लखनऊ में किया गया।

भागीदारी महोत्सव का उद्देश्य हाशिये पर उपस्थित वर्गों की समस्याओं, उनसे जुड़ी प्रतिभाओं और उनके लिये रचे गये साहित्य के विषय में गहन विचार-विमर्श एवं समाधान को लेकर गम्भीर मंत्रणा की गई। इस आयोजन में कई सत्रों में पैनल चर्चाएं आयोजित की गयीं। इस कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों के दौरान देश के प्रतिष्ठित विद्वानों, अध्येताओं, विचारकों, लेखकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मा. मंत्री समाज कल्याण, असीम अरुण की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस दौरान प्रमुख सचिव, समाज कल्याण डॉ. हरिओम तथा निदेशक पवन कुमार उपस्थित रहे।

प्रथम सत्र में प्रीति चौधरी ने संचालन करते हुये समकालीन दलित साहित्य एक शक्ति व मौजूदा दौर में साहित्य और उसका प्रभाव विषय पर गम्भीर विमर्श को आगे बढ़ाया। प्रबुद्ध

वक्ताओं ने इस विषय पर अपने विचार और अनुभव साझा किये। प्रमुख सचिव समाज कल्याण, डॉ. हरिओम ने कहा कि जैसा कि पूर्व में यह होता आया है कि काव्यशास्त्र और साहित्य मात्र आनन्द के लिये रचा गया था। बाद में उसमें उपदेश तत्व भी जुड़ा किन्तु साहित्य का परिदृश्य इससे कही व्यापक होना चाहिए। इस क्रम में मराठी साहित्यकार एवं दलित साहित्य के स्तम्भ शरण कुमार लिम्बले जी ने अपने संघर्ष साझा किये और बताया कि कैसे उन्होंने भेद-भावपूर्ण वातावरण में संघर्ष कर अपना स्थान बनाया। इसी प्रकार दलित साहित्य में अपनी आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कन्धों पर' के लिये प्रसिद्ध साहित्यकार शिवराज सिंह 'बेचैन' ने अपनी बदायूं से लेकर दिल्ली तक अपनी यात्रा के संघर्ष को व्यक्त किया।

द्वितीय सत्र में 'हाशिये के लोगों का सिनेमा' पर सार्थक एवं उत्कृष्ट चर्चा हुयी। इस सत्र में फिल्मकार एवं कलाकार श्री अतुल तिवारी, संपादक एवं कथाकार श्री शैलेन्द्र सागर ने अपने विचार प्रकट किये। इस पत्र में आर्टिकल-15 और अछूत कन्या जैसी फिल्मों के कुछ दृश्य प्रदर्शित करके यह बताने का प्रयास किया गया कि दलित या वंचित वर्ग के लिये बड़े निर्देशकों ने भी अभी सीमित फिल्में ही बनायी हैं। इस पर अभी काफी काम किया जाना शेष है। अतुल तिवारी ने पुरानी कई हिन्दी फिल्मों का उदाहरण देते हुये यह बताया कि इस विषय पर हिन्दी फिल्मों में काफी काम हुआ है किन्तु अभी और भी उल्लेखनीय कार्य किया जाना अपेक्षित है। फिल्म इण्डस्ट्री में जाति वर्ग के अपेक्षा प्रतिभा को सम्मान दिया जाता है, मैं उसका उदाहरण हूं। सभी वक्ता इस बात पर सहमत थे कि इस तरह के कम चर्चित विषयों पर ऐसे विमर्श होते रहने चाहिए तथा फिल्मों का निर्माण भी होना चाहिए।

तृतीय सत्र में 'सम्मानित बनाम उपेक्षित' विषय पर चर्चा करते हुये प्रोफेसर संघमित्रा आचार्य, प्रोफेसर कौशल पवार, शाजिया इल्मी और प्रोफेसर रानू उनियाल ने हाशिए पर पहुंचा दिये गये वर्गों की महिलाओं के विषय में अपने बहुमूल्य विचार व अनुभव साझा किये। प्रोफेसर पवार ने बताया कि एक सफाई कर्मचारी के परिवार से सम्बन्ध रखते हुये भी उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी नियति बदल दी, उन्होंने हिन्दी व संस्कृत में अपनी कविताएं भी सुनाईं। शाजिया ने मुस्लिम महिलाओं के परम्परागत बंधनों की स्वतंत्रता पर चर्चा की। संघमित्रा ने स्वास्थ्य सेवाओं में दलित महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला।

चतुर्थ सत्र में 'ट्रांसजेंडर सवाल सामाजिक मान्यता का' विषय पर देविका देवेंद्र मंगलामुखी, कीरत कुमार, डॉ. संजना साईमन, निलोफर मस्के, फ्रांसिस सुन्धी, गुरुजान सिंह, शिविन गुरूजा आदि ने सक्रिय भागीदारी की। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिये सबसे पहला मुद्दा उनकी पहचान या सामाजिक मान्यता का है। इस वर्ग के व्यक्तियों को अपनी पहचान को स्थापित करने के लिये जिस संघर्ष से गुजरना पड़ता है, उसकी चर्चा इस सत्र में की गई। गुरुजान ने अपनी कविताएं भी सुनायीं। यह सत्र अत्यंत सराहनीय रहा। ट्रांसजेंडर समुदाय से जुड़े हुये संवेदनशील मुद्दों पर व्यापक विमर्श किया गया और समाज में इस वर्ग को लेकर पुराने मिथक तोड़ने हेतु आह्वान किया गया।

एक महत्वपूर्ण सत्र में 'विकलांग विमर्श' पर कहानीकार कंचन चौहान और निदेशक, समाज कल्याण, पवन कुमार के मध्य सार्थक चर्चा हुयी। चर्चा के दौरान कंचन ने बताया कि

विकलांगता से उबर पाना उनके लिये निर्विकल्प था। उनकी पुस्तक 'तुम्हारी लंगी' जिसमें तीन कहानियां विकलांग विमर्श पर भी हैं, चर्चा का केन्द्र बिन्दु रहीं। पवन कुमार ने विशेष रूप से उनकी रचनाओं में निहित भाव पर उनकी अभिव्यक्ति पर बधाई देते हुये इस दिशा में और भी सार्थक लेखन किये जाने की अपेक्षा की। इस पूरे सत्र में यह बात प्रमुखता से स्थापित की गयी कि मानसिक दृढ़ता से शारीरिक अक्षमता को विजित किया जा सकता है। इस विकलांग विमर्श अथवा कहना चाहिए दिव्यांगजन विमर्श ने (कंचन और पवन कुमार के संवाद ने) उपस्थित श्रोताओं और दर्शकों के मध्य नई विचार पद्धति का बीजारोपण अवश्य किया होगा।

कार्यक्रम के अंतिम सत्र में 'हमारा समाज हमारी भागीदारी' विषय पर प्रोफेसर टी.वी. कट्टीमनी, श्री गुरु प्रकाश, सुश्री पीयूष एंटनी ने मा. मंत्री समाज कल्याण के साथ चर्चा में भाग लिया। युवा और शिक्षित दलित समुदाय का परिवर्तित रूप सामाजिक गतिशीलता को एक नई दिशा दे रहा है। विद्वानों द्वारा चर्चा में बताया गया कि शिक्षा तक पहुंच के साथ युवा दलित विभिन्न क्षेत्रों में राजनीति, बुद्धिजीवी, शिक्षक, कलाकार आदि सभी क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं।

इस साहित्य उत्सव में डॉ. नीना गुप्ता, डॉ. राजगौरव व डॉ. विशाखा सेन द्वारा लिखित पुस्तक 'मिथ माईथालॉजी और माइथोलॉजिकल नैरेटिव्स' का विमोचन किया गया। इस प्रकार के कार्यक्रम सामाजिक विषमताओं को दूर करने में सहायक सिद्ध होंगे। इसी विचार के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस भागीदारी साहित्य उत्सव में सभी वक्ताओं को सुनने के लिये बड़ी संख्या में प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग ने प्रतिभाग किया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यह आयोजन अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल रहा।

मेटाफर लखनऊ की अध्यक्ष कनकरेखा चौहान, जयदीप नारायण माथुर, दीपा मिश्रा आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।